International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-6, Issue-6 Nov-Dec- 2019
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

महात्मा गॉधी और स्वामी विवेकानन्द जी के विचारों का स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Lalit Mohan Sharma
Research Guide,
Department of Education, C.M.J University, Jorabat, Meghalaya.

Dolly
Research Scholar,
Department of Education, C.M.J University, Jorabat, Meghalaya.

सार

प्रकृति त्रिगुणात्मिका है, अतएव प्रकृति का कोई भी प्राणी त्रिगुण से रहित नहीं है। विशेष कारणों से किसी में सत्त्व अधिक होता है, तो किसी में रजोगुण अथवा किसी में तमोगुण। कोई भी प्राणी इनसे मुक्त नहीं है। किसी भी युग में किसी समाज ने उत्कर्ष–प्राणी में स्त्रियों के सम्मान की अवहेलना का कोई भाव प्रदर्शित नहीं किया और न असभ्यावस्था में ही स्त्रियों की उपयोगिता किसी रूप में कम की जा सकी। वर्तमान युग विज्ञान और सूचना तकनीकी का युग है जिससे समाज का भूमण्डलीकरण हो रहा है, फलस्वरूप किसी समाज अथवा राष्ट्र की समस्याएँ विश्व की समस्याएँ तथा विश्व की समस्याएँ उस समाज या राष्ट्र की हैं। आज स्त्री शिक्षा केवल एक समाज अथवा राष्ट्र की समस्याएं नही है, बल्कि ये भूमण्डलीय समस्यायें हैं। हाँ यह अवश्य है कि विकासशील देशों में विकसित देशों की अपेक्षा ये समस्यायें अधिक विकराल है। वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था सामाजिक वर्गीकरण ही पैदा नहीं करती बल्कि लिंग भेद की बढ़ावा देने वाली है। विकासशील देशों को कुछ अन्य विकट समस्याओं का भी सामना करना पड़ा है, जैसे निरक्षरता, दहेज–प्रथा, बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा, अधिकारों के हनन् आदि स्त्री शिक्षा की प्रमुख समस्यायें हैं। इन समस्याओं का दार्शनिक विचारों से समाधान करने के उद्देश्य से ही प्रस्तुत शोध अध्ययन की अनुभूति हुई।

1.1 प्रस्तावना

जगत की रचना ही प्रकृति को लेकर हुई है। स्त्रियों के मान और उपयोग में कमी या भेद समय–समय पर अवश्य रहा है, किन्तु पुरूष के स्वार्थ को ही उसका कारण समझ लेना हमारी भूल होगी। समय, स्थान, रूचि और परिस्थिति के कारण समाज के नियम सभी देशों के सभी काल में एक तरह के नहीं रहने पाते और संशोधन की आवश्यकता भी किसी न किसी समय में हमारे सामने आ खड़ी होती है, किन्तु निर्माण या संशोधन का संबंध बाह्य स्वरूप से ही होता है। भारतवर्ष सदा से धर्म प्रधान राष्ट्र रहा है। यहाँ पूर्वकाल से ही

ऋषि–महर्षि, संत–महात्मा, यती–सती एवं धर्मोपदेशक गुरू होते आये है, जिन्होंने अपने दिव्य आचरणों और प्रेरक वचनों से समाज को प्रभावित किया है। यहाँ के नर–नारी सदा से धर्म के आदर्श रहे हैं। स्त्री शिक्षा के संबंध में विभिन्न भारतीय शास्त्रों, आचार्यों, समाजसुधारकों शिक्षाशास्त्रियों ने भारतवर्ष में स्त्रियों को गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित किया। स्त्रियॉ राजनीतिक, सामाजिक तथा प्रशासनिक कार्यों मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। इस दृष्टि से भारतवर्ष अवश्य भाग्यवान् है कि यहाँ की जनता का ध्यान प्रतिदिन शिक्षा की ओर आकर्षित होता जा रहा है। स्त्री–पुरूष और बच्चे सभी इस ओर उन्मुख हो गये हैं। परन्तु किसके लिए कौन पथ श्रेयस्कर है, इसका निर्णय नहीं हो पा रहा है। लक्ष्यहीन पथिक की भाँति जिसके जी में जो आता है वह उधर की उड़ान मार रहा है।

अतः शिक्षा का युग होने पर भी आश्चर्य है कि स्त्री–पुरूष किसी को भी अपने कर्तव्य का ध्यान नहीं है। पथ का ज्ञान नहीं है। सोचने पर हम इसी तथ्य पर पहुंचते है कि हमारी वर्तमान शिक्षा–पद्धति ही ऐसी है जिसने पुरूष और स्त्री की पवित्र भावनाओं को नष्ट कर उन्हें परानुकरण–परायण बना दिया है और उन्हें शक्तिहीन बनाकर मानसिक परतंत्रता की श्रंखला में आबद्ध कर दिया है। उनके मस्तिष्क के लिए ऐसे विषय मिलते है, जो उनके सार्वजनिक जीवन के लिए अनुपयुक्त और हानिकारक सिद्ध होते हैं।

1.2 गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम

गाँधी जी की शिक्षा योजना को बेसिक शिक्षा की संज्ञा दी जाती है। इस शिक्षा का पाठ्यक्रम क्रिया–प्रधान है तथा इसका उद्देश्य बालक को कार्य, प्रयोग एवं खोज द्वारा उसकी शारीरिक, मानसिक और आत्यात्मिक शक्तियों का विकास करना है जिससे वह आत्मनिर्भर रहते हुए समाज का उपयोगी अंग बन जाये। गाँधी जी ने अपने क्रिया–प्रधान पाठ्यक्रम में मातृभाषा बेसिक क्राफ्ट, गणित, समाजशास्त्र, सामान्य विज्ञान, कला तथा संगीत आदि विषयों के प्रमुख स्थान दिया। उन्होंने बताया कि पहली कक्षा से लेकर पॉचवी कक्षा तक के सभी बालक कविताओं के लिए एक सा पाठ्यक्रम होना चाहिए। इसके पश्चात् बालकों को बेसिक क्राफ्ट की तथा बालिकाओं को गृह–विज्ञान की शिक्षा मिलनी परम आवश्यक है।

ध्यान देने की बात है कि गाँधी जी की शिक्षा योजना प्राथमिक एवं लघु माध्यमिक कक्षा स्तर तक ही सीमित है। इस दृष्टि से उनके द्वारा संगठित किया हुआ पाठ्यक्रम भी केवल इसी स्तर तक के लिए है।

आगे उन्होंने अपने द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जिस पाठ्यचर्या की संरचना की वह कुछ इस प्रकार थी– ''हस्त कौशल एवं उद्योग, कढ़ाई, बुनाई, बागवानी, कृषि, काष्ठकला, चर्मकार्य, पुस्तक कला, मिट्टी, का काम और मछली पालन आदि) मातृभाषा, हिन्दुस्तानी (आज की दृष्टि से राष्ट्रभाषा हिन्दी उनके लिए जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है।) व्यवहारिक गणित (अंक गणित बीज गणित रेखा गणित और नाप–तौल आदि) सामाजिक विषय (इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र और समाज–शास्त्र) सामान्य विज्ञान (बागवानी,

वनस्पति विज्ञान, प्राणी–विज्ञान, रसायन विज्ञान और भौतिक विज्ञान), संगीत, चित्र, काव्य, स्वास्थ्य विज्ञान (सफाई व्यायाम ओर खेल–कूद आदि) और आचरण शिक्षा (नैतिक शिक्षा, समाज सेवा एवं अन्य सामाजिक कार्य) और इसमें सबसे अधिक बल हस्त–कौशलों पर दिया था और उसके बाद मातृभाषा पर।

गाँधी जी के द्वारा निर्धारित शिक्षा के प्रकार को निरूपित करने से पूर्व उनके द्वारा शिक्षा के सम्प्रत्यय को समझ लेना परमावश्यक है। गाँधी जी के अनुसार शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास के रूप में स्वीकार की जा सकती है उनकी दृष्टि में साक्षरता शिक्षा नहीं है, यह तो न शिक्षा का प्रारम्भ है ओर न अन्त। यह तो स्त्री–पुरुषों को शिक्षित करने का साधन है। शिक्षा को परिभाषित करते हुए गाँधी जी ने स्वयं लिखा है– शिक्षा से मेरा तात्पर्य है– ''बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुमुखी विकास।''

1.2.1 जन–शिक्षा – गाँधी जी के समय भारत में लगभग 13 प्रतिशत लोग साक्षर थे। विद्यालयी शिक्षा के अभाव में उनमें न आत्मविश्वास था ओर न जागररूकता थी। तब हम प्रगति कैसे करते। गाँधी जी ने अशिक्षा के अभिशाप से बचने के लिए जन शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा और स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया। जन–शिक्षा दो रूपों में होगी– एक तो बालकों को शिक्षित करने के लिए इन्होंने बेसिक शिक्षा योजना प्रस्तुत की। यह शिक्षा की राष्ट्रीय योजना थी जिसमें 7 से 14 वर्ष के बालकों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा पर बल दिया गया था। इस शिक्षा को गाँधी जी ने हस्त कौशलों पर केन्द्रित किया, एक तो इसलिए कि हस्त–कौशल हमारे जीवन के आधारभूत कार्य हैं।

1.2.2 स्त्री शिक्षा – गाँधी जी स्त्री को ईश्वर की श्रेष्ठतम रचना मानते थे। गाँधी जी ने इस बात को स्पष्ट किया कि यद्यपि पुरुष और स्त्री का कार्य क्षेत्र थोड़ा भिन्न होता है लेकिन उनकी सांस्कृतिक आवश्यकताएं समान होती हैं। इसलिए दोनों को अपने–अपने विकास के समान अवसर प्राप्त होने चाहिए। इन्होंने स्पष्ट किया कि मुख्य रूप से स्त्री को पत्नी, माता व समाज के निर्माता के रूप में कार्य करना होता है। पहले दो कार्यों में वह पुरूष से भिन्न अवश्य होती है पर अपने तीसरे उत्तरदायित्व का निर्वाह करने के लिए उसे अपनी सभ्यता व संस्कृति का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए। परन्तु किसी की स्थिति में स्त्रियों को संगीत व नृत्य से दूर रखना चाहते थे। इनका मत था कि ये क्रियाएं वासना को बढ़ावा देती है, ये स्त्री व पुरुष की शिक्षा में केवल इतना ही अन्तर करते थे कि स्त्रियों को गृह कार्य की अतिरिक्त शिक्षा दी जाये। स्त्री पुरुष को समाज में बराबर का स्थान देकर उनकी शिक्षा की व्यवस्था कर गाँधी जी ने समाज का बड़ा उपकार किया है।

1.2.3 सह–शिक्षा – गाँधी जी ने लड़के–लड़कियों को एक साथ रखकर पढ़ाने के प्रयोग किये थे ओर उनके आधार पर सह–शिक्षा की सम्भावना स्वीकार की थी। गाँधी जी के अनुसार प्राइमरी व उच्च स्तर पर सह–शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है परन्तु किशोरावस्था पर यह उचित नहीं होती। अपने इस मत को

व्यक्त करते समय ये प्रत्येक समाज को यहां छूट देते हैं कि वह अपने पर्यावरण को दृष्टि में रखते हुए सहशिक्षा को स्वीकार व अस्वीकार करने के लिए स्वतंत्र हो। इस प्रकार गाँधी सहशिक्षा के सम्बन्ध में सामाजिक पर्यावरण पर निर्भर करते थे।

1.3 विवेकानन्द जी के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम तो उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन होता है। स्वामी जी ने अपने द्वारा निश्चित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु एक विस्तृत पाठ्यक्रम का विधान प्रस्तुत किया। उन्होंने शिक्षा की पाठ्यचर्या में मनुष्य के शारीरिक विकास हेतु खेलकूद, व्यायाम और यौगिक क्रियाओं और मानसिक एवं बौद्धिक विकास हेतु भाषा, कला, संगीत, इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित और विज्ञान विषयों को स्थान देने पर बल दिया। भाषा के सम्बन्ध में स्वामी जी का दृष्टिकोण बड़ा व्यापक था। इनकी दृष्टि से अपने सामान्य जीवन के लिए मातृभाषा, अपने धर्म–दर्शन को समझने के लिए संस्कृत भाषा अपने देश को समझने के लिए प्रादेशिक भाषाओं एवं विदेशी ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी को समझने के लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान आवश्यक है। अतः इन भाषाओं को पाठ्यक्रम में स्थान देना चाहिए। कला को एक मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग मानते थे। और इसके अन्तर्गत चित्रकला, वास्तुकला, संगीत, नृत्य और अभिनय सभी को पाठ्यक्रम में स्थान देने के पक्ष में थे। इनका तर्क था कि भारत का इतिहास पढ़ने से बच्चों में स्वदेश–प्रेम विकसित होगा और यूरोप का इतिहास पढ़ने से वे भौतिक श्री प्राप्त करने के लिए कर्मशील होंगे। इन्होंने राजनीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र को पाठ्यक्रम में स्थान देने पर भी बल देते थे। इनका विश्वास था कि इन दोनों विषयों के अध्ययन से बच्चों में राजनैतिक चेतना जागृत होगी और वे आर्थिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगें। मनुष्यों में समाज सेवा का भाव उत्पन्न करने और उन्हें समाज की ओर उन्मुख करने के लिए स्वामी जी ने शिक्षा के सभी स्तरों पर समाज सेवा को अनिवार्य करने पर बल दिया।

इस प्रकार शिक्षा की पाठ्य चर्या के विषय में स्वामी जी का दृष्टिकोण अति व्यापक था और क्यों न होता, इन्होंने अपने देश के उच्चतम धर्मदर्शन को पढ़ा और समझा था और पाश्चात्य जगत के भौतिक वैभव को अपनी आँखों से देखा था। ये जानते थे कि पाश्चात्य जगत के भौतिक ज्ञान से हम अपना भौतिक विकास कर सकते हैं और अपने देश के आध्यात्मिक ज्ञान से अपना आध्यात्मिक विकास कर सकते हैं। इस प्रकार शिक्षा की पाठ्यचर्या के विषय में स्वामी जी का दृष्टिकोण अति आधुनिक और अति व्यापक था। स्वामी जी शिक्षा को केवल एक वर्ग तक सीमित रखने में विश्वास नहीं रखते थे इसलिए उन्होंने शिक्षा को कई स्वरूपों में विभाजित किया जो इस प्रकार है–

1.3.1 जनसाधारण की शिक्षा– स्वामी जी के समय अपने देश की स्थिति बड़ी दयनीय थी। इसके विपरीत पश्चिमी देशों की दशा बहुत अच्छी थी। वहाँ के लोग सम्पन्न थे और वैभवशाली जीवन जी रहे थे, स्वामी जी

ने इस सबको अपनी आँखों से देखा था। इन्होंने अनुभव किया कि राजनीतिक पराधीनता, आर्थिक विपन्नता, सामाजिक पिछड़ेपन और धार्मिक अन्ध विश्वासों इन सबका मूल कारण अशिक्षा है। इन्होंने उद्घोष किया कि जब तक भारत के सभी नर–नारी शिक्षित नहीं होते तक तक हम जीवन के किसी भी क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकते। इन्होंने समाज और राज्य से जन–शिक्षा की व्यवस्था की अपेक्षा की। जनशिक्षा से स्वामी जी का तात्पर्य बच्चों, युवकों और अशिक्षित प्रौढ़ों सबको शिक्षित करने से था। इन्होंने शिक्षित लोगों का आह्वाहन किया कि वे अशिक्षित प्रौढ़ों और वृद्धों को साक्षर बनायें, उन्हें शिक्षित करें। उस समय शिक्षा जन–साधारण को सुलभ नहीं थी। इसका क्षेत्र केवल समर्थ व्यक्तियों तक ही सीमित था। दीन–दुःखियों तथा निम्न वर्ग के लोगों को भर–पेट भोजन भी नहीं मिल पाता था। अतः स्वामी जी ने तत्कालीन भारतीय समुदाय की आर्थिक दृष्टि से हीन दशा को सुधारने के लिए जन–साधारण की शिक्षा पर बल दिया और कहा, मैं जनसाधारण की अवहेलना करना महान राष्ट्रीय पाप समझता हूँ यह हमारे पतन का मुख्य कारण है। जब तक भारत की सामान्य जनता को एक बार फिर उपयुक्त शिक्षा, अच्छा भोजन तथा अच्छी सुरक्षा नहीं प्रदान की जायेगी तब तक प्रत्येक राजनीति बेकार सिद्ध होगी।

1.3.2 स्त्री शिक्षा– स्वामी जी अपने देश की स्त्रियों की दयनीय दशा के प्रति बड़े सचेत थे। उनका उद्घोष था कि नारी का सम्मान करो, उन्हें शिक्षित करो और उन्हें आगे बढ़ने के लिए अवसर दो। उन्होंने स्पष्ट किया कि जब तक हम नारी को शिक्षित नहीं करते तब तक समाज को शिक्षित नहीं कर सकते और जब तक समाज को शिक्षित नहीं करते तब तक समाज अथवा राष्ट्र को विकसित नहीं कर सकते। परन्तु स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण पूर्णतया भारतीय था। ये उन्हें आदर्श गृहणी, आदर्श माताएं आदर्श शिक्षिकाएं और समाज सुधारक बनाना चाहते थे। ये नारियों के लिए ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करना चाहते थे जिसके द्वारा ऐसी नारियों का निर्माण हो जो पवित्र हो निर्णय हो, गृहस्थ धर्म के निर्वाह में निपुण हो, वीर पुत्रों को जन्म दे, आदर्श मातएं बने और समाज को उचित शिक्षा दें।

1.3.3 सह–शिक्षा– स्वामी जी सह–शिक्षा के विरोधी थे। उनका पहला तर्क तो यह था कि स्त्री–पुरुषों की शिक्षा की पाठ्यचर्या समान नहीं होती इसलिए उन्हें साथ–साथ कैसे पढ़ाया जा सकता है। उनका दूसरा तर्क यह था कि सह–शिक्षा आत्म संयम में बाधक होती है। ये लड़कियों के लिए अलग विद्यालयों की स्थापना करने और उनमें केवल स्त्री शिक्षिकाओं की नियुक्ति करने के पक्ष में थे।

1.4 निष्कर्ष

महात्मा गॉधी और स्वामी विवेकानन्द जी के के स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचार एवं सिद्धान्त आधुनिक भारतीय परिस्थितियों में अमल किए जा रहे हैं। परन्तु अभी और भी सुधार हम इन महान शिक्षाविदों के विचारों से कर सकते हैं। अभी स्त्री शिक्षा सम्बन्धी तथा खास तौर पर ग्रामीण स्त्री शिक्षा सम्बन्धी अनेकों समस्यायें हैं पर उन

समस्याओं का समाधान हम इन महान शिक्षा दार्शनिकों के शैक्षिक विचारों पर अमल करके कर सकते हैं। स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में महात्मा गाँधी और विवेकानन्द द्वारा दिए गए सुझावों को ध्यान में रखकर योजनाओं का निर्माण करना चाहिए जिससे स्त्री शिक्षा की समस्या पर नियंत्रण पाया जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- कुलकर्णी, शरद अनन्त (2009) द्वितीय संस्करण ,"गांधी जी एवं विवेकानन्द जी के विचार दर्शन", खण्ड–4, सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली।
- माथुर, एस0 एस0 (2011) "गांधी जी के शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- शर्मा, आर0 ए0 (2009) "तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, मूल्यमीमांसा एवं शिक्षा", सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ।
- शर्मा, आर0ए0 (2011) "शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ।
- शर्मा, आर0ए0 (2005) "शिक्षा अनुसंधान", सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ।
- शर्मा, आर0ए0 (2003) "शिक्षा अनुसंधान", सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ।
- त्रिपाठी, लालबचन (2006) "मनोवैज्ञानिक अनुसंधान विधियाँ", ,एच0पी0भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट, आगरा।
- मित्तल, एम0एल0 (2012) "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", इन्टरनैशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
- भिशीकर, चन्द्रशेखर परमानन्द (2001) द्वितीय संस्करण, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन" खण्ड–5 (राष्ट्र की अवधारणा), सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नई दिल्ली।
- राठौर, कुसुम लता (2009) प्रथम संस्करण, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ।
- ऑबेराय, सुरेश चन्द्र (2005) "शिक्षा तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्धन", आर0 लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, मेरठ।